3, 71, 438
प्रसारण संख्या का विश्व कीर्तिमान रचने वाली भारत की एकमात्र बाल पत्रिका

सर्वाधिक प्रसारित हिन्दी बाल मासिक
देवपुत्र

बाल शहीदों की गौरव गाथा

अब्दुल रसूल

● रविचन्द्र गुप्ता

अब्दुल रसूल का जन्म सन् १९१० में शोलापुर (मध्यप्रदेश) में हुआ था।

अब्दुल रसूल, अशफाकउल्ला खाँ के बलिदान से बहुत दुखी था। उससे प्रेरणा लेकर उसने ब्रिटिश शासन से संघर्ष की ठान ली। वह वक्त का इंतजार करने लगा। १९३० में गाँधी जी की गिरफ्तारी के कारण सारे देश में जुलूस, धरने और प्रदर्शनों का जोर था। महाराष्ट्र के शोलापुर में अहिंसक क्रांति की ज्वाला ने विकराल रूप धारण कर लिया। तुलजापुर रोड़ के जंगलों में घुसकर जंगल कानून तोड़ने का निश्चय किया गया। अब्दुल रसूल जोर-जोर से नारे लगाता हुआ पुलिस के घेरे को तोड़ कर आगे बढ़ा। तभी पुलिस ने गोली चला दी। एक व्यक्ति शंकर को गोली लगी। उसने उसी स्थल पर प्राण त्याग दिए। अब तो भीड़ बेकाबू हो पुलिस पर झपट पड़ी। लोगों ने पुलिस वालों की बंदूकें छीन कर उन्हीं से उनकी धुनाई शुरू कर दी। अब्दुल रसूल तो खून का प्यासा था ही। उसने पुलिस की धुनाई करके अपनी चिर पिपासा को खूब शांत किया।

इसके बदले में अगले दिन ९ मई, १९३० को पुलिस ने शहर के लोगों को घरों से निकाल-निकाल कर खूब मारकाट मचाई। घरों को आग लगा दी। पुलिस पर बहशीपन सवार हो गया। महिलाओं को बेइज्जत कर आग में झोंका गया। अनेक लोगों को

गिरफ्तार किया गया। मुकदमे में अब्दुल रसूल, मलप्पा धन शैट्टी, जगन्नाथ शिंदे तथा श्री कृष्ण शारदा चारों को फाँसी की सजा घोषित हुई। इनमें अब्दुल रसूल सबसे छोटा था। उसने माफीनामे पर हस्ताक्षर करने से मना कर दिया और १२ जनवरी, १९३१ को केवल बीस वर्ष की आयु में ही दोनों ने सहर्ष फाँसी का फंदा चूम लिया।

● दिल्ली